अंक 29

वर्ष-8वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

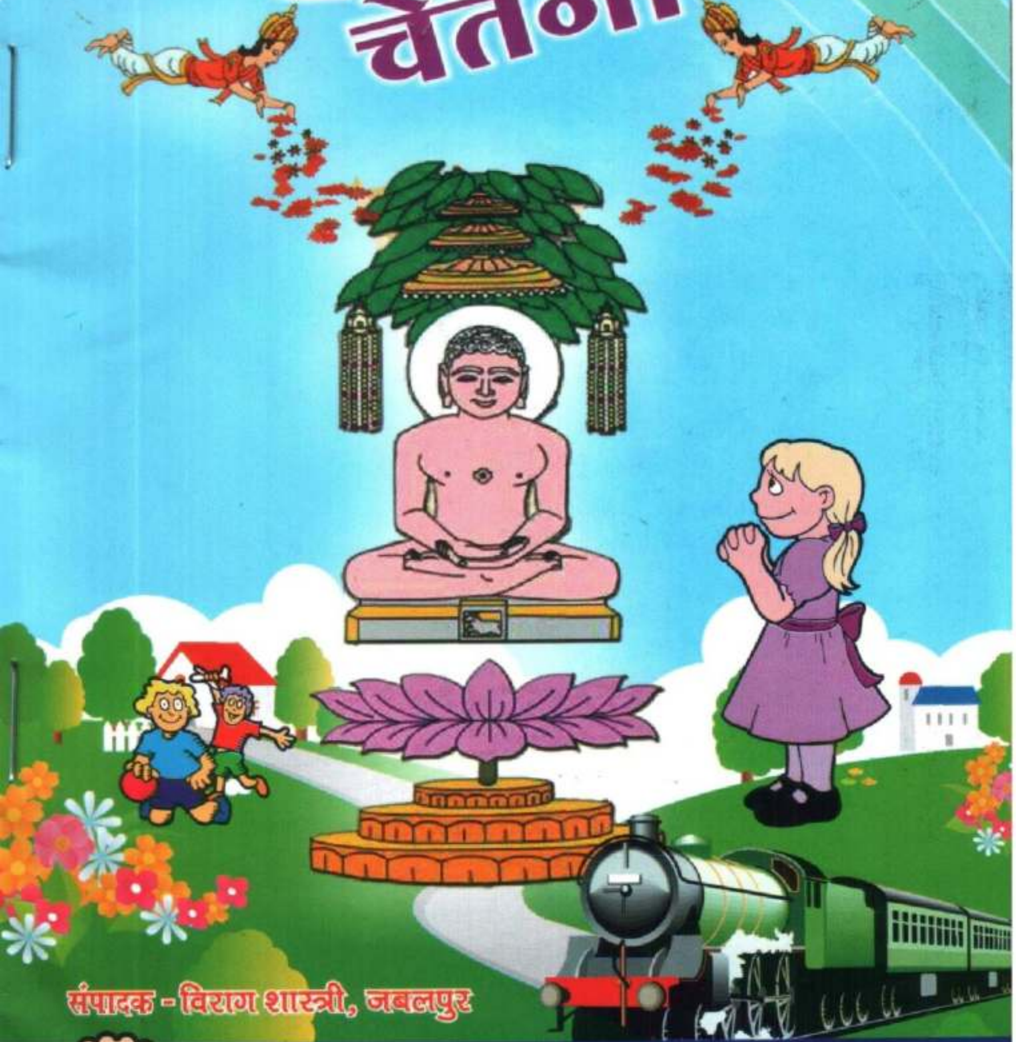

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1	संपादकीय	1
2	आत्मकल्याण	2
3	सावधान जीवो	3
4	लंदन मंदिर/जन्मदिन	4
5	दिन चर्या	5
6	राजकुमार सन्मति	6-7
7	मोह का फल	8
8	खर्च	9
9	पृथ्वी	10
10	चिन्ह पहचानो रंग भरो	11
11	महान नारियां	12
12	कहानी	13-15
13	धैर्य खोते बच्चे	16-17
14	भारत का नाम	18-19
15	ज्ञान पहेली	20
16	अभय कुमार	21
17	समाचार	22
18	आपके पत्र	23
19	सच हो सकता है	24
20	मंदिर जाते	25
21	सही जोड़ी	26
22	परिणामों की विचित्रता	27-28
23	प्रश्न उत्तर	29
24	हमारी नवीन योजनायें	30
25	कॉमिक्स	31-32

विशेष
वर्ष 2014 का रंगीन कलेण्डर

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित कर सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106

संपादकीय

प्यारे बच्चो! आपको चहकती चेतना के अंक निरन्तर पसंद आ रहे होंगे। हमने बहुत भाग्य से जैन कुल पाया है । हमारा कर्तव्य है कि हम अपने जैन धर्म को पहचानें। हमारी यही भावना है कि जैन समाज का प्रत्येक बच्चा अच्छे आचरण से जैन धर्म की परम्परा को निभाये। इसलिये हम आपको जैन धर्म की प्यारी –प्यारी बातें और जीवन की उपयोगी और नई–नई बातें देने का प्रयास करते रहते हैं और आपके प्यार भरे पत्रों से हमारा उत्साह बढ़ जाता है।

आपकी परीक्षायें भी होने वाली हैं। खेलना बंद करके पढ़ाई पर ध्यान देना और यदि आप नियमित अ्ययन करेंगे तो आपको अच्छे नम्बर मिलेंगे। पर बच्चो! परीक्षा या पढाई का बहाना करके जिनमंदिर जाने से मना मत करना, पढाई तो हमारे एक भव में सफलता दिलायेगी,परन्तु देव–शास्त्र–गुरू की भक्ति तो हमारे मोक्षमार्ग की सफलता का कारण बनेगी जाना। गर्मी की छुट्टियों में बाल संस्कार शिविर में जरूर जाना, लेकिन कहाँ जाना है – ये आप अपने पापा से अभी से पूछ लीजिये। चलो! बहुत बातें हो गईं अब आप अपनी चहकती चेतना का आनंद लीजिये।

– विराग शास्त्री, सम्पादक

कर्मन सब जीवों की भिन्न–भिन्न वरनी।
देखो कर्म उदय की विपरीतता और सावधान हो जाईये और आत्मकल्याण में लग जाईये।

देखिये! इस बालक को। इस बालक ने स्कूल से जल्दी घर जाने के लिये एक बडी गल्ती कर दी। इसने स्कूल के मेन गेट से न जाकर स्कूल के दीवार पर लगे लोहे सरिये को फांदकर घर जाना चाहा और पैर फिसल गया और सरिया उसके मुंह में फंस गया। बहुत मुश्किल से सरिये को काटा गया और उसे अस्पताल ले जाकर उसका इलाज किया। तो बच्चो! सावधान जल्दबाजी खतरनाक हो सकती है।

जापान में जन्मा यह बालक इसकी माँ की एक लापरवाही से यह नाली के पाइप में फंस गया और 3 घंटे फंसे रहने के बाद उसके प्राण निकल गये। यह है कर्मों की विचित्रता।

सावधान जीवो!

मुथलायम ऊन के लिये खरगोशों के साथ कितनी क्रूरता। सावधान जीवों !
अपनी आत्मा के हित के लिये अभी से तैयार हो जाओ वरना हमारी भी दशा ऐसी ही न हो।

बेचारा गजराज ! यह हाथी आसाम के गुवाहाटी का है। यह हाथी पुल पार कर रहा था और अचानक उसका पैर फिसल गया और वह पुल पर गिर गया। वह कई घंटे पुल पर ही फंसा रहा। हाथी के लगभग सारे अंगों से खून निकल रहा था। बहुत प्रयत्नों के बाद उस हाथी को बहुत मुश्किल से निकाला गया तब तक हाथी की मृत्यु हो चुकी थी।

लंदन स्थित जिन मंदिर का मनोहारी दृश्य

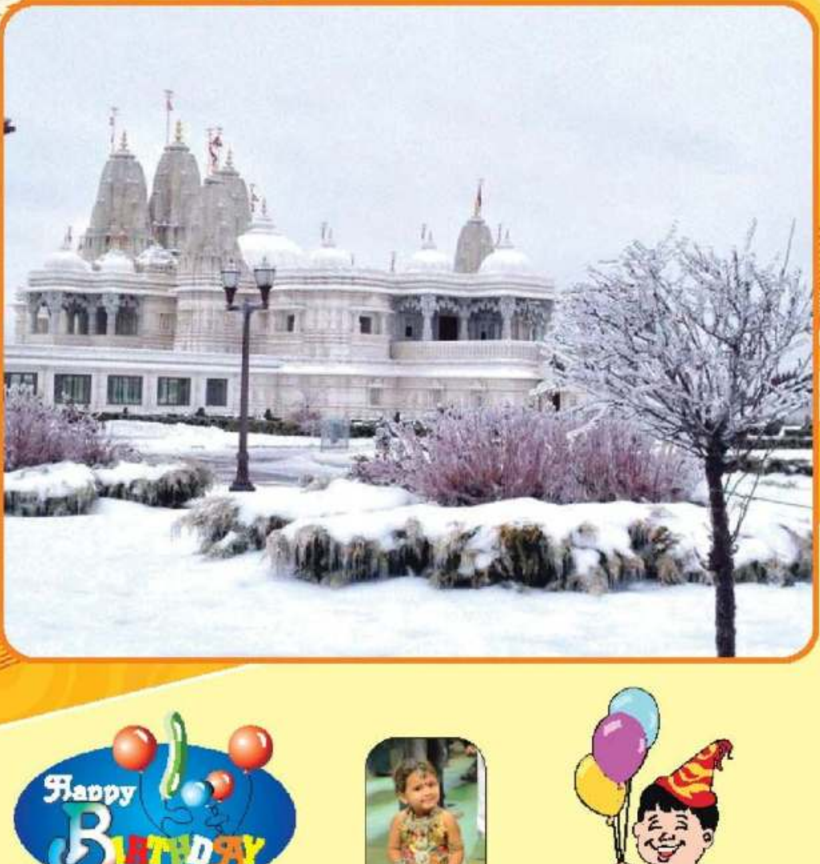

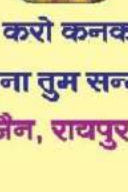

कनक आपका नाम है, करो कनक (स्वर्ण) सा काम।
नारी का आदर्श बन, पाना तुम सन्मान ।।

कनक जैन, रायपुर 20 दिसम्बर 2013

दिनचर्या

बिना जगाये जल्दी उठना, णमोकार जप प्रभु को जपना।
चरण बड़े जन के फिर छू लो, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलो।।
फिर मंजन कर आप नहाओ, जिनपूजन को मंदिर जाओ।
पीकर दूध पढो गुण पाओ, भोजन कर विद्यालय जाओ।
वापस आकर भोजन करना, बाद में मनोरंजन कुछ करना।
प्रतिदिन पाठशाला को जाओ, सबके चरण छुओ गुण पाओ।।
प्रभु दर्शन कर लौटो भाई, घर पर रहकर करो पढाई।
मानो बड़े जनों का कहना, खुश रहकर नित आदर करना।
आलस तजकर मेहनत करना, अपना काम स्वयं सब करना।
णमोकार को जपकर सोओ, सुव्रत धार समय ना खोओ।

\- श्री सुव्रतसागरजी

राजकुमार सम्प्रति

पाटलीपुत्र में राजा अशोक राज्य करता था । अशोक का पुत्र कुणाल उज्जैनी में रहता था। जब वह आठ वर्ष का हुआ तो सम्राट अशोक ने पत्र लिखा। उस पत्र में लिखा–अधीयताम् कुमारम् अर्थात् कुमार को पढ़ाओ । कुणाल की सौतेली माता पास ही खड़ी थी उसने वह पत्र देखने के लिये मांग लिया और सलाई में थूक लगाकर 'अ' पर बिन्दु लगा दी । इस तरह 'अधीयताम्' से 'अंधीयताम्' हो गया अर्थात् कुमार को अंधा कर दो । सौतेली माता ने वह पत्र राजा को वापस कर दिया ।

राजा का मन कहीं और था तो उसने बिना पढ़े वह पत्र मुहर बन्द करवाकर कुमार के लिये उज्जैनी भिजवा दिया।

पत्रवाचकों ने पत्र पढ़ा । कुमार ने पूछा कि मेरे पिता ने पत्र में क्या लिखा है तो वे चुप हो गये । बार–बार पूछने पर सेवकों ने बताया कि पत्र में लिखा है कि आपको अंधा कर दिया जाये। कुमार बोला – हम मौर्य वंश के हैं । हमारे कुल में गुरुजनों और पिता की आज्ञा का प्राण की कीमत पर भी पालन किया जाता है। इसके बाद कुमार ने गर्म सरिये से अपने आंखें फोड़ लीं । सम्राट अशोक यह समाचार सुनकर अत्यंत दुःखी हुये। सम्राट ने दुःखी मन से उज्जैनी का राज्य दूसरे पुत्र को दे दिया और कुणाल को एक गांव दे दिया । बाद में कुणाल ने विवाह किया, उसको एक पुत्र की प्राप्ति हुई । कुणाल गायन कला में

अत्यंत होशियार था। वह गांव–गांव घूमने लगा । एक बार वह घूमता हुआ पाटलीपुत्र आया । राजा को मालूम हुआ कि एक अंधा गन्धर्व आया है जो गाने में अत्यंत कुशल है । राजा ने उसे बुलवाया ।

कुणाल ने पर्दे के पीछे से गीत गाया और अपनी गायन कला से राजा को प्रसन्न कर दिया । तब राजा ने पूछा – मांगो क्या मांगते हो ?

कुणाल ने उत्तर दिया – चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र और सम्राट अशोक का पुत्र कौड़ी (बिना मूल्य की वस्तु) मांगता है।

राजा ने पूछा – तुम कौन हो ?

कुणाल ने कहा – आपका पुत्र।

राजा ने परदा हटाकर उसे गले लगा लिया और बोले क्या तुम कौड़ी के भी योग्य नहीं हो जो तुम कौड़ी मांग रहे हो ?

मंत्रियों ने कहा – राजपुत्रों के लिये राज्य ही कौड़ी है।

राजा बोला – अंधे होकर तुम राज्य कैसे करोगे ?

मेरा एक पुत्र है– कुणाल ने कहा।

सम्राट ने पूछा – कब हुआ ? कुणाल ने कहा– वह सम्प्रति (अभी) ही हुआ है। सम्राट ने उसका नाम सम्प्रति रखा और उसे लाने की आदेश दिया।

सम्प्रति ने जैन धर्म का उतना ही प्रचार किया था जितना अशोक ने बौद्ध धर्म का। उसके द्वारा बनवाये अनेक जैन स्तूप अशोक के द्वारा बनवाये गये मान लिये जाते हैं।

मुक्तक

मृदुता लोहे को शीशा बना देती हैं।
क्षमा हैवान को भगवान बना देती हैं।
अंहकार के महल से मत झांकों मेरे यार,
कषायें इन्सान को शैतान बना देती हैं।।

लघु कहानी

मोह का फल

एक गरीब आदमी खेती करके अपना पेट भरता था। भाग्य से कुछ दिनों में धनवान बन गया। परिवार भी बहुत बड़ा हो गया। सारे पुत्र युवा होकर अपनी –अपनी दुकानों पर और खेती पर काम करने लग गये थे। किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं था।

एक दिन उस वृद्ध किसान से मुनिराज ने कहा – भाई! घर में सब प्रकार की अनुकूलता है अब तो तुम्हें सब त्यागकर आत्कल्याण करना चाहिये।

वृद्ध किसान बोला – मुनिवर! घर की देखभाल करने वाला कोई नहीं है, यदि घर छोड़ दूँगा तो सब लुट जायेगा। अभी तो बच्चों की शादी करना है। मुनिराज यह सुनकर चले गये।

कुछ दिन बाद वह वृद्ध मरकर कुत्ता हो गया और अपने घर के दरवाजे पर बैठकर पहरा देता रहता। कोई अनजान आदमी आता तो भौंककर उसको दूर भगा देता। एक दिन वही मुनिराज आये और कहने लगे – भाई ! इस दशा में आकर अब तो विचार कर लो और आत्मकल्याण कर लो। कुत्ते ने अपनी वाणी में कहा – मैं घर छोड़ दूंगा तो मेरे घर की रखवाली कौन करेगा ? आपके साथ बाद में चलूँगा।

कुछ समय बाद वह कुत्ता मरकर बैल हो गया। उसका मालिक अनाज ढोता था। बैलगाड़ी में उस पर बहुत ज्यादा बोझ लादा जाता था। वह बहुत ज्यादा मेहनत करता था। वह बैल मार खाकर भी काम करता रहता था। एक दिन वही मुनिराज आये और बैल से बोले – भाई! अब तो मेरी बात मान लो। चलो ! आत्मकल्याण कर लो। बैल अपनी भाषा में कहने लगा कि अभी खेतों में अनाज पड़ा है। उसे गोदाम तक कौन पहुँचायेगा ? मुनिराज यह सुनकर चले गये। वह बैल बूढ़ा होकर मर गया और मरकर अपने उसी घर में सांप हो गया। वह सांप अपनी तिजोरी पर बैठा रहता। घर के लोग देखकर डरते रहते। एक दिन वह अपने पूर्व पुत्र के पैर में लिपट गया। यह देखकर दूसरे पुत्रों ने उसे डण्डे से बहुत मारा। उसकी सांस चल रही थी। तब वही मुनिराज आये और बोले भाई! अब तो संभल जा। जिन पुत्रों के मोह में तुमने इतने दुःख भोगे उन्हीं पुत्रों ने तुम्हारी हत्या करने का प्रयास किया। इतना सुनकर सांप मर गया और बुरे परिणामों से मरकर नरक चला गया। देखा आपने ! मोह का फल।

संकलित – जैन धर्म की कहानियाँ
भाग 15

खर्च

अरे बेटे तूने कल ही पांच रुपये मांगे थे और आज फिर पांच रुपये मांग रहा है।

हाँ पिताजी! वे सब खर्च हो गये। आज और दे दीजिये अब आगे चार दिन तक पैसा नहीं मांगूगा।

पिता ने पांच रुपये दे दिये और अपने एक खास नौकर से कहा – तुम मेरे बेटे के पीछे जाओ और देखना यह रुपये कहाँ खर्च करता है ?

घर से थोड़ी दूर निकलने के बाद उस बालक ने एक कच्चे मकान से अपने दोस्त को बुलाया। दोनों एक साथ एक पुस्तक की दुकान पर गये और उस दोस्त को पांच रुपये की पुस्तक दिलाते हुये वह बालक बोला – कल और आज की इन दस रुपयों की पुस्तकों से तेरी पढ़ाई की व्यवस्था हो जायेगी।

यही बालक चितरंजनदास बड़ा होने पर देशबन्धु के नाम से विख्यात हुआ।

अभिमान का फल

एक कुष्ठ रोग का रोगी एक चौराहे पर हाथ फैलाये भीख मांग रहा था। एक युवक के 10 रुपये देकर उससे पूछा – कि तुम्हारा सारा शरीर गल रहा है फिर क्यों इतना कष्ट करके जीवन जी रहे हो ? रोगी ने उत्तर दिया कि पहले मैं बहुत सुन्दर था और मुझे अपनी सुन्दरता पर बहुत अभिमान था। मैं अपना अधिंकाश समय इसकी सेवा में लगाता था। बाद में मुझे कुष्ठ रोग हो गया। मित्र! यह मेरे अभिमान का फल था। मैं इसलिये जीवन जी रहा हूँ कि लोग मुझे देखकर शरीर के अभिमान का त्याग करें।

हमारा जैन भूगोल

पृथ्वी गोल नहीं समतल है

विज्ञान के अनुसार पृथ्वी गोल है। इस तरह यदि कोई पृथ्वी के एक छोर से यात्रा प्रांरभ करे तो पृथ्वी गोल होने के कारण उसे वापस वही पर आना चाहिये जहाँ से यात्रा प्रारंभ की थी। ई.सन् 1938 में केप्टन जे.रास. ने केप्टन द फेशियर के साथ दक्षिणी महासागर में दक्षिणी ध्रुवप्रदेश में 30. अक्षांश पर बर्फ के पहाड़ों से स्लेज गाड़ी से यात्रा प्रारंभ की। वहाँ उन्होंने आवश्यक सामान लेकर अन्य सामग्री छोड़ते हुये 450 से 1000 फुट ऊँची बर्फ की दीवाल पर अपनी यात्रा की। उन्होंने एक ही दिशा में चालीस हजार मील की यात्रा की। लगातार चार वर्ष तक एक ही दिशा में यात्रा की फिर उस दिशा का अंत नहीं मिला। अन्ततः दिशा सूचक यंत्र की सहायता से जहाँ से चले थे वहीं वापस आ गये।

आज के विज्ञान के अनुसार दक्षिणी ध्रुव प्रदेश से पृथ्वी की परिधि 10700 मील होती है। केप्टन जे.रास ने 40000 मील की यात्रा की। यदि पृथ्वी गोल होती तो वे यात्रा प्रारंभ करने के स्थान पर चार बार आ गये होते। इस प्रयोग से हमें ज्ञात होता है कि पृथ्वी गोल नहीं है, बहुत विशाल है। आज स्कूलों में यह सिखाया गया है कि पृथ्वी के चारों ओर कई बार प्रदक्षिणा की जा चुकी है। परन्तु यह सत्य नहीं है।

– समकित जैन, पूना

◆आत्म कल्याण में कठिनता की कल्पना ही कठिनाई है।

◆सुखी को इच्छा नहीं और इच्छा वाला सुखी नहीं।

◆हाथ फैलाना हीनता-दीनता की निशानी है।
हाथ जोड़ना पात्रता की निशानी है।
और हाथ पर हाथ रखना वीतरागता की निशानी है।

◆जीवन भर प्रवचनों में मत बैठो, प्रवचनों को जीवन में बिठाओ।

नीचे दिये तीर्थंकर के चिन्ह पहचानिये और तीर्थंकर का नाम लिखकर रंग भरिये

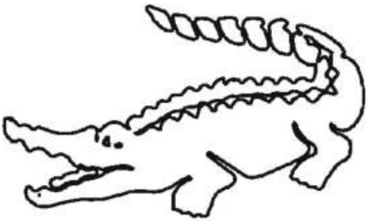

तीर्थंकर –

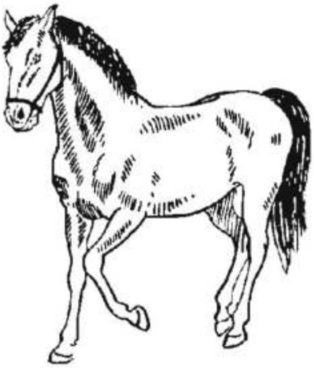

तीर्थंकर –

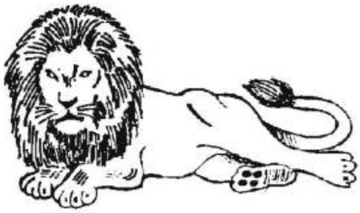

तीर्थंकर –

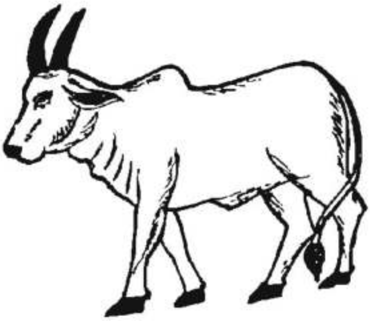

तीर्थंकर –

महान नारियाँ

1- वह कौन सी नारी थी जिसके शील के प्रभाव से अग्नि कुण्ड जल कुण्ड में परिवर्तित हो गया था ?
- सीता सती

2- वह कौन थी जो जटायु पक्षी को सुबह, दोपहर, शाम के समय पंचमेष्ठियों को नमस्कार कराती थी?
- सती सीता

3- वह कौन थी जिन्होंने सीता सती को आर्यिका दीक्षा दी थी ?
- पृथ्वीमति माताजी।

4- वह कौन थी जिनके शील के प्रभाव से देवों का विमान रुक गया था?
- प्रभावती

5- वह कौन थी जिन्होंने कुन्दकुन्द जैसे महान पुत्र को जन्म दिया था?
- कुन्दलता

6- वह कौन थी जो राजकुमार ऋषभदेव आदिनाथ की दादी थी ?
- इन्दुरेखा

7- वह कौन थी जिन्होंने प्रतिज्ञा ली थी कि जब बाहुबली की प्रतिमा श्रवणबेलगोला में नहीं बन जायेगी तब तक मेरा दूध का त्याग है?
- कालवा देवी (चामुण्डराय की माता)

8- वह कौन थी जो जिनेन्द्र भगवान की पूजा करते समय पूजन में गज मोती चढाती थी?
- मनोवती

9- वे कौन थीं जिनसे रावण की 48000 हजार रानियों ने आर्यिका दीक्षा ली थी?
- शशिकांता आर्यिका

10- वह कौन थीं जिन्होंने अपनी होने वाली सास को दीक्षा दी थी ?
- राजुलमति

धर्मशाला

महाराजा विक्रमादित्य को अपने राजमहल की सुन्दरता पर बहुत गौरव था। एक बार उस राजभवन में एक विद्वान ने आकर ठहरने की इच्छा बताई तो राजा के सेवकों ने कहा - पण्डितजी! यह धर्मशाला नहीं है, यहाँ ठहरने का स्थान नहीं मिल सकता। तभी महाराज विक्रमादित्य बाहर से लौट रहे थे तो पूछने पर राजसेवकों ने विद्वान की जिद सुनाई। तब महाराज ने विद्वान को बहुत समझाया, लेकिन पण्डितजी नहीं माने तो महाराज ने क्रोध में कहा कि इस पण्डित को राजमहल से बाहर निकाल दो।

तब विद्वान ने कहा - महाराज! आप गुस्सा क्यों करते हैं? यह तो धर्मशाला है। आप भी इसमें ठहरिये, मैं भी इसमें ठहरता हूँ।

राजा बोला - यह तो मेरा राजभवन है, धर्मशाला तो यहाँ से कुछ दूरी पर है।

विद्वान बोला - आप यहाँ 100 वर्षों से यहाँ रहते हैं क्या ?

राजा बोला - क्या पागलपन की बातें करते हो? मेरी आयु अभी 50 वर्ष भी नहीं है।

विद्वान बोला - आपसे पहले इसमें कौन रहता था ?

राजा बोला - मेरे पूज्य पिताजी।

विद्वान बोला - तो वे अब कहाँ चले गये और कब लौटेंगे ?

राजा बोला - उनका तो स्वर्गवास हो गया, वे अब कभी नहीं लौटेंगे।

विद्वान बोला - तो फिर आप इसमें कब तक रहेंगे?

राजा बोला - जब तक जीवन शेष है। अंत में तो सभी को जाना पड़ता है।

यह सुनकर विद्वान हंसकर बोला - तो भले आदमी! जहाँ मनुष्य कुछ समय के लिये ठहरकर चला जाये उसे धर्मशाला ही तो कहते हैं। तो ये राजमहल धर्मशाला ही हुआ ना।

साभार - पं. पूनमचंदजी छाबड़ा, जयपुर

आगर्भ दिगम्बर मुनि

जिनसेन अपनी 5 वर्ष की अवस्था में बाल्यावस्था में अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे। जो एक दूसरे को खोजकर छू लेता था वह जीत जाता था। जिनसेन ने कहा–जो कोई मुझे छू लेगा उसे आज का अपना भोजन दे दूँगा। किसी लड़के ने जिनसेन को खोजकर उसका हाथ छू लिया तो जिनसेन ने कहा – यह तो तुमने मेरे हाथ को स्पर्श किया है मुझे कहाँ पकड़ा ?

इस प्रकार किसी ने कोई अंग पकड़ा, किसी ने कोई। सबको एक ही उत्तर मिला – मुझे पकड़ो, यह तो सब शरीर है। मुझे छूना तो दूर रहा, तुम लोग मुझे देख भी नहीं सकते। यह दृश्य एक आचार्य देख रहे थे। उन्होंने बच्चे को प्रतिभाशाली समझकर उसके माता–पिता से पढ़ाने के लिये मांग लिया।

समय बीतने पर यही बालक महान आचार्य जिनसेन के नाम से प्रसिद्ध हुये। ये आगर्भ दिगम्बर मुनि थे, आगर्भ दिगम्बर का तात्पर्य जिन्होंने जन्म से मृत्यु पर्यन्त कपड़े नहीं पहने।

– साभार सन्मति संदेश

जिनवाणी

◆ जिनवाणी किसे कहते हैं ?

जो धर्म का ज्ञान कराती है ।

◆ जिनवाणी किसकी वाणी है ?

अरिहन्त भगवन्तों की वाणी है ।

◆ जिनवाणी कब पढ़ते हैं ?

प्रतिदिन योग्यकाल में विनय से पढ़ते है ।

◆ जिनवाणी कौन सा ज्ञान कराती है ?

आत्मा-परमात्मा, निज-पर का ज्ञान कराती है ।

◆ जिनवाणी कैसे पढ़ना चाहिये ?

हाथ-पैर, मुख धोकर पढ़ना चाहिये ।

◆ जिनवाणी कैसे रखना चाहिये ?

ऊँचे आसन तथा ऊँचे हाथ पर ही रखना चाहिए पैर पर नहीं रखना चाहिये ।

◆ जिनवाणी पढ़ने से क्या लाभ हैं ?

बुद्धि का विकास होता है, अच्छे-बुरे कार्यों का ज्ञान होने से दोष का त्याग और गुण ग्रहण का भाव होता है, कषाय मंद होती है और भेद विज्ञान होता है । ।

◆ जिनवाणी के और कौन से नाम हैं ?

जिनआगम और जिनसरस्वती आदि ।

धैर्य खोते बच्चे और विवेक खोते अभिभावक

आज के दौर जैसे–जैसे नई टेक्नोलॉजी आ रही है, नित नये मोबाइल, टेबलेट और मनोरंजन के साधन उपलब्ध हो रहे हैं वैसे–वैसे बच्चों और युवाओं में धैर्य का अभाव देखा जा रहा है। हर बच्चा अपनी जिद से अपनी बात मनवाना चाहता है और अभिभावक भी उसकी इच्छाओं पर विचार न करके अपने मोह में अंधे होकर उनकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते रहते हैं। समय से पहले बडे होते बच्चे भी अपने माता–पिता को दबाब में रखने का प्रयास करते हैं।

युवा भी फैशन के दौर में शालीनता, विनय और परिवार की परिस्थिति का ध्यान न रखते हुये अपने अभिभावकों पर पूरा दबाब बनाने का प्रयास करते हैं और अभिभावक भी कहीं बेटा–बेटी कुछ गलत कदम न उठा लें इस डर से न चाहते हुये भी उनकी हर गलत इच्छा को पूरा करने लगते हैं।

नवम्बर माह में इंदौर के एक 10 बालक वर्षीय भाई ने अपनी बहिन से उसकी नई स्कूटी चलाने के लिये मांगी। बहन ने उसे समझाने की बजाय उसे गाड़ी देने से साफ मना कर दिया। उस भाई को बहन की बात का इतना बुरा लगा कि उसने तुरंत कमरे में जाकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

दूसरी घटना लखनऊ की है। लखनऊ में एक परिवार की युवा बेटी ने अपनी माँ से रात्रि को अपने दोस्तों के साथ बाजार जाकर चाट खाने की आज्ञा मांगी। रात्रि का जानकर उसकी माँ ने बेटी को बाहर जाने से साफ मना कर दिया। इसे अपना अपमान समझकर बेटी ने आधा घंटा बाद ही अपने कमरे में जाकर आत्महत्या कर ली। इतनी सी बात पर इतनी नाराजगी और माँ ने तो बेटी के हित की ही बात थी।

यदि अपने बच्चों के हित की बात कहना भी अपराध है तो माँ और बड़ी बहन होने का क्या अर्थ है और माँ और वह बहन भी जीवन भर इस बात के लिये दुखी होती रहेगी कि उन्होंने अपने बच्चों से ऐसा क्यों कहा ? तो क्या अपने बच्चों की हर सही–गलत बात पर आंख बंद कर लीं जायें। क्या यही रास्ता श्रेष्ठ है। फेस बुक और इंटरनेट की दुनिया के आज के बच्चे और युवा दीवाने हो गये हैं। क्या हमने सोचा है हमारे बच्चों की इस प्रवृत्ति का कौन जिम्मेदार है ? हम यह कहकर बचने का प्रयास करते हैं कि क्या करें आजकल का जमाना ही ऐसा है, हमारे संस्कार तो ऐसे नहीं थे पता नहीं ये बच्चे......., टीवी सिनेमा ने हमारे बच्चों को बिगाड़ दिया है आदि आदि। तो क्या बात सचमुच ऐसी ही है ? हम वर्तमान के परिवेश को किसी अपेक्षा थोड़ा बहुत जिम्मेदार तो ठहरा सकते हैं परन्तु सर्वथा नहीं।

कभी हमने सोचा है कि हमारे पास बच्चों के लिये कितना समय है ? हम अपने व्यवसाय, आजीविका आदि में इतने व्यस्त हो गये हैं कि हमारे पास उनके लिये ही समय नहीं है । पिता अपने पत्नी और बच्चों को रुपये देकर अपने कर्तव्य की पूर्ति कर रहे हैं । क्या यही पिता का दायित्व है ... क्या पिता का अपने बच्चों के साथ भावनात्मक स्तर पर कोई दायित्व नहीं है, हमारे पास बच्चों के साथ बैठकर उन गंदे सीरियल्स व फूहड़ बातों पर हंसने के लिये तो समय है, सारहीन क्रिकेट और भ्रष्ट और चारित्रहीन नेताओं की चर्चा करना तो हमें देशभक्ति दिखाई देता है पर जिन बातों से हमारे बच्चों का संस्कार और भविष्य निर्धारित होता है उनकी चर्चा करना हमें व्यर्थ लगता है । हमने अपने बच्चों से यह तो सदैव पूछते हैं कि तुमने होमवर्क किया कि नहीं, फीस जमा हुई कि नहीं या अन्य कुछ । परन्तु हमने अपने बच्चों से यह पूछा अपना कर्तव्य नहीं समझा कि वे आज मंदिर गये कि नहीं ? हमने यह धमकी तो जरुर दी कि यदि परीक्षा में नम्बर कम आये तो ठीक नहीं होगा, परन्तु यह धमकी कब दी कि तुम यदि जिनमंदिर नहीं गये, पूजन प्रक्षाल नहीं किया तो अच्छा नहीं होगा । क्या हम उन्हें साथ में तीर्थयात्रा ले गये हैं और उन्हें बताया कि ये हमारे महापुरुषों की विरासत है । शायद नहीं क्योंकि हमें स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई तो जरूरी लगती है और जिनभक्ति, पूजन स्वाध्याय मजबूरी या ऐच्छिक । हमें धन का महत्व तो समझ में आता है पर धर्म का नहीं । बच्चे भी क्या करें जब उनकी भावनाओं को समझने वाला उनके सुख-दुख की समस्यायें हल करने वाला कोई नजर नहीं आता तो वे अपना रास्ता स्वयं ही बनाने का प्रयास करते हैं और अपने अनुभवहीन मित्रों से सलाह लेते हैं शायद यही भूल उनके वैचारिक पतन का कारण बनती है ।

हमारे द्वारा बच्चों के बचपन में संस्कारों को उपेक्षित करने का फल है कि वे युवा होकर अपने को अपने पिता से बड़ा समझने लगते हैं । उनकी वाणी में उनकी शिक्षा का और धन का अहं बोलता है । वे अपने माता-पिता को अपने सामने अशिक्षित सा महसूस कराना चाहते हैं । मुझे नहीं पता कि विश्व की कौन सी शिक्षा अविनय, अपमान, कृतघ्नता सिखलाती है...........

सावधान ! अपने बालकों को शिक्षा के साथ संस्कार और जिनधर्म की विरासत दीजिये, उनके साथ बैठकर उन्हें अपनापन दीजिये, अपनी इच्छायें उन पर थोपने का प्रयास मत करें बल्कि उनके लिये श्रेष्ठ का निर्णय कीजिये । मेरा सो सही नहीं, सही सो मेरा । हम शांति से इन सब बातों का विचार करें तो शायद हम कुछ हद अपने बच्चों संस्कारों के साथ जीवन जीना सिखायें क्योंकि संस्कार बिना की सुविधायें पतन का रास्ता ही तैयार करेंगी ।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

भारत का नाम भारत क्यों ?

18 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने भारत का नाम दिया और दुष्यन्त पुत्र भरत के नाम पर 'भारत' नाम हुआ ऐसा बताया। आधुनिक खोजों और शोधों से मालूम हुआ है कि जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के प्रथम पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। पुराणों में इसके कई श्लोक मिलते हैं। इससे पहले भरत के दादा नाभिराय के नाम पर इस देश का नाम अजनाभवर्ष था। श्रीमद्‌भागवत में उल्लेख है कि – अजनाभं नामैतद्‌वर्ष भारतमिति यत् आरभ्य व्यपदिशन्ति।

भरत नाम के चार प्रमुख व्यक्ति भारत देश में हुये –

1. तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत।
2. राजा रामचन्द्र के अनुज भरत।
3. राजा दुष्यन्त के पुत्र भरत।
4. नाट्‌य शास्त्र के रचियता भरत।

इन चारों में प्रथम के ही शिलालेख और शास्त्र प्रमाण मिलते हैं। प्रसिद्ध हिन्दू ग्रन्थ अग्निपुराण के दसवें अध्याय में, मार्कण्डेय पुराण के 50 अध्याय में, स्कन्द पुराण के माहेश्वर खण्डस्थ में 'नाभेः पुत्रश्च ऋषभः ऋषभाद् भरतौभवत्। तस्य नाम्ना त्विदं वर्ष भारतं चेति कीर्त्यते।।'

भरत के नाम पर भारत सिद्ध करने के स्पष्ट प्रमाण हैं। इसी प्रकार शिवपुराण, भागवत, ब्रह्मपुराण, लिंग पुराण में उल्लेख हैं – ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से भारतवर्ष हुआ।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के सामने जब समस्या आई कि इस देश का नाम क्या होना चाहिये ? तब नेहरूजी ने कहा – जिस नाम के प्राचीन शिलालेख मिलेंगे उसी को देश का नाम स्वीकार किया जायेगा। तब उड़ीसा में जैन सम्राट खारवेल के द्वारा खुदवाये गये शिलालेख में भरत के नाम पर भारत के प्रमाण मिल गये। इस शिलालेख में प्राकृत और ब्राह्मी भाषा में है। इस शिलालेख से सिद्ध हो गया कि चक्रवर्ती भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत रखा गया था और इस तरह इस देश नाम 'भारत ' ही घोषित हो गया। प्रसिद्ध विद्वान पद्मभूषण पण्डित बलदेव उपाध्याय ने भी इस बात को स्वीकार किया है।

हमें इस बात का गौरव होना चाहिये कि हमारे जिनशासन के वीर पुरूष भरत के नाम 'भारत' हुआ ।

Good S.M.S.

The best medicine in the world without any cost and side effect is "SMILE" medicine properly when ever you needs.

Mobile nirjeev hai. sim iski atma hai. sms wo gyann hai jo bantne se badhta hai isliye he prani balance ki moh maya tyag kar nirantar Sms kiya kar.

700 papers used per metar = 1 tree cut yearly. save paper go green with e statemant.

ज्ञान पहेली

1\. है अटूट धन जिसके घर में, पैसा न जिसके पास।
सारी दुनिया जिसका बिस्तर, चादर है आकाश॥

2\. एक बरस भोजन नहीं पाया, फिर भी भोजन करते थे।
भले ही तन को छोड़ दिया हो, वे तो कभी न मरते थे॥

3\. जब तक मन में रहती हूँ।
तन को दुबला करती हूँ॥

(उत्तर इसी अंक में)

4\. सबको ही सन्मार्ग दिखाता,
मगर उसे कोई छू न पाता॥

5\. मंदिर में ही रहता हूँ, लम्बी मेरी पूंछ।
उल्टा मुंह लटका रहे, मुंह के अन्दर मूंछ॥

साभार – ब्र. विनोद जी कृत ज्ञान पहेली से

सहयोग प्राप्त – संस्था द्वारा गतिमान आगामी योजनाओं में हमें निम्न साधर्मियों का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। हम सभी साधर्मियों का आभार व्यक्त करते है– आत्मदीप भविशा भायाणी चेन्नई, शैलेषभाई दोशी एर्नाकुलम, अरुण जैन चेन्नई, सुरेशचंदजी गांधी दाहोद, अलीगंज से वैद्य राजेश जैन, सुनील जैन, दिनेशचन्द्र अनुपमप्रभा जैन, अशोक कुमार जैन, शोभा जैन, वैद्य राजेशचन्द्र जैन रीतू जैन रितु नरेन्द्र जैन, रोहिणी, दिल्ली

संस्था द्वारा 5000 रु में 15 वर्षीय सदस्यता प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत चहकती चेतना के साथ संस्था द्वारा निर्मित होने वाली समस्त सी.डी. और साहित्य निःशुल्क भेजी जाती है। पूर्व में निर्मित सीडी और साहित्य भी भेजा जायेगा।

नये सदस्य – स्वीटी धवल कुमार जवेरी, अहमदाबाद

कहानी अभय कुमार की दृढ़ श्रद्धा

राजा श्रेणिक के पुत्र अभयकुमार सच्चे श्रावक थे । वे जिनधर्म का दृढ़ता से पालन करने वाले व्यक्ति थे। सच्चा श्रावक होने से स्वप्न में भी वीतरागी देव के अलावा अन्य देव को नमस्कार नहीं करते थे । एक बार स्वर्ग में सौधर्म इन्द्र ने अपनी सभा में अभयकुमार की बहुत प्रशंसा की। अभयकुमार की प्रशंसा सुनकर ने एक देव ने घमंड में कहा कि यदि इन्द्रराज की आज्ञा हो तो मैं अभयकुमार की दृढ़ता को भंग कर सकता हूँ। ये मध्यलोकवासी थोड़े से संकट में ही घबरा जाते हैं। सौधर्म ने कहा कि यह काम इतना आसान नहीं है। फिर भी तुम्हें जाने की आज्ञा है।

उसी समय एक देव ने अपनी शक्ति से नागदेव का मंदिर बनवाया और नगर में प्रसिद्धि करवा दी कि नगर के बाहर एक नागदेव का मंदिर जमीन से अपने आप प्रगट हुआ है । जो कोई उसकी भक्ति पूजन करता है उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है । यह समाचार सुनकर सारी राजगृही नगरी के लोग उसके दर्शन करने चल पड़े । अभयकुमार को भी समाचार मिला पर वे नहीं गये । मंत्रियों ने बहुत समझाया पर फिर भी वे नहीं गये ।

कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि कि राजसभा में बहुत सारे सर्प भागे चले आ रहे हैं । यह सब देखकर राजगृही की जनता बहुत भयभीत हो गई उन्हें लगा कि अभयकुमार के द्वारा नागदेवता की भक्ति नहीं करने का यह दण्ड है। नागदेव क्रोधित हो गये हैं । लोगों ने फिर अभयकुमार को समझाया। अभयकुमार बोले कि मेरा माथा वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के अतिरिक्त किसी अन्य के आगे नहीं झुक सकता । यदि उन सर्पों ने काट लिया तो एक बार मरण होगा परन्तु कुदेव की वंदना करने से अनंत बार जन्म-मरण का कष्ट होगा । इतने में सर्प ने राजा और रानी का काट लिया । परन्तु अभयकुमार ने मस्तक नहीं झुकाया ।

अभयकुमार की अद्भुत दृढ़ता देखकर देव ने अपना असली रूप प्रगट कर लिया और अभयकुमार को नमस्कार करके क्षमा मांगी और राजा और रानी की बेहोशी भी समाप्त हो गई ।

बच्चो! इस कहानी से हमें शिक्षा लेनी चाहिये हमें वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के अतिरिक्त किसी को नमस्कार नहीं करना चाहिये ।

पंचकल्याणक का आयोजन सानंद संपन्न

मध्यप्रदेश के दमोह जिले के छोटे ग्राम जबेरा में दिनांक 14 दिसम्बर से 19 दिसम्बर 2013 तक श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव ऐतिहासिक सफलता के साथ संपन्न हुआ। इस महोत्सव में डॉ उत्तमचंदजी जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, पण्डित अनिल शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। महोत्सव के संपूर्ण विधिविधान प्रतिष्ठाचार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन मे उनके सहयोगियों द्वारा संपन्न कराये गये। इस महोत्सव में देश के हजारों साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। इस महोत्सव में विद्वानों के आध्यात्मिक प्रवचन हुये और कु. ज्ञप्ति जैन देवलाली के निर्देशन में प्रस्तुत अष्ट देवियों के सुन्दर, गरिमापूर्ण नृत्य देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये। महोत्सव के म ध्य में जिनमंदिर निर्माण में पाँच वर्षों तक अपनी नि:स्वार्थ अतुल्य सेवायें देने वाले श्री अनिल जैन बीना का एवं जिनमंदिर निर्माण में मुख्य आर्थिक सहयोग देने वाले श्री विमल जैन श्रीमति कुसम जैन दिल्ली का महोत्सव समिति द्वारा अभिनंदन किया गया। यह महोत्सव पण्डित रजनीभाई दोशी केनिर्देशन में एवं श्री विराग शास्त्री, जबलपुर एवं श्री सुरेन्द्र मलैया के संयोजन में संपन्न हुआ।

– पण्डित कमल जैन एवं पण्डित विनोद जैन, जबेरा

जबेरा पंचकल्याणक की वीडियो सी.डी. उपलब्ध

जबेरा में संपन्न हुये पंचकल्याणक की वीडियो के संपादन का कार्य चल रहा है। इसकी वीडियो डी.वी.डी. 20 जनवरी 2014 तक उपलब्ध हो जायेगी। यह वीडियो प्रवचन, नृत्य, राज सभा, इन्द्र सभा, प्रत्येक कल्याणक के पृथक् वीडियो एवं सम्पूर्ण पंचकल्याणक की डी.वी.डी. के रुप में उपलब्ध होगा। आप इसके लिये हमसे 9300642434 पर संपर्क कर सकते हैं। –संपादक

नयेसदस्यों का चहकती चेतना परिवार में हार्दिक स्वागत

जबेरा में आयोजित हुये पंचकल्याणक महोत्सव में एवं अन्य माध्यमों से अनेक साधर्मियों ने चहकती चेतना की सदस्यता स्वीकार की। संस्था सभी नये सदस्यों का चहकती चेतना परिवार में हार्दिक स्वागत करती है। पत्रिका तीन माह के पश्चात् चौथे माह के प्रथम सप्ताह में सामान्य डाक से भेजी जाती है अत: चौथे माह के10 तारीख तक पत्रिका न मिलने पर आप हमसे संपर्क कर सकते हैं अथवा ई मेल अथवा हमारे मोबाइल पर अपना पता भेजकर पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं।

–संपादक

आपके पत्र

हृदय के अभिन्न अंग
दिगम्बर जैन समाज के दैदीप्यमान ध्रुव तारा
श्री विरागजी,

शुद्धात्म सत्कार। जिनवाणी के पावन धारा से जीवन उपवन महक रहा होगा। आज समग्र समाज मानसिक तनाव में आकर दर्शन के नाम पर प्रदर्शन कर रही है। हमें तत्वज्ञान की किरण मिली है तो उसे जन-जन तक पहुँचाना हमारा परम कर्तव्य है और आप वह कार्य वीडियो सी.डी. के माध्यम से कर रहे हैं। एतदर्थ धान्यवाद। आगे कार्य बहुत है, कठिनाईयों के पहाड़ हैं लेकिन प्रज्ञा के धनी को क्या अलभ्य ?

ज्ञान ज्ञान से चहके चेतन, जय जय गाते जिन भगवान।
आज मान लोया कल मानो, ज्ञान संपदा नित सुखादान॥
चेतन चहल पहल की धुन से, समता रस का झरना झरता।
पर का कर्तापन मिट जावे, ज्ञाता धुन होवे वर्षा॥
जैसे लड्डू मीठा होता, वैसा आतम ज्ञान सुजान।
चहके महके ज्ञान चेतना, जानो भैया निज भगवान॥
जिन कुल में ये जन्म लिया है, हमको बनना है भगवान।
शिवमारग रथ पकड़ लिया ये,चहके चेतन गाये गान॥

– विनोद मोदी, दलपतपुर

स्नेही सम्पादक महोदय,

आपकी पत्रिका नई पीढ़ी के बच्चों के लिये बहुत उपयोगी है। अत: धन्यवाद एवं बधाई। हमारी पवित्र भावना है कि आप इस पत्रिका का सदा निर्बाध प्रकाशन करते रहें। ये सेवा अनमोल है।

– ओ.पी.आचार्य, जयपुर

कथा गुच्छ

सच हो सकता है

एक बार अकबर अपने कक्ष में बैठे बीरबल को अपना स्वप्न सुना रहे थे। अकबर ने कहा - बीरबल ! आज रात के तीसरे प्रहर में मैंने बड़ा भयानक स्वप्न देखा ..... मैंने देखा कि रबर की गेंद की तरह मैं तीर-चार बार ऊपर उछला फिर नीचे गिर गया, देखता हूँ कि मैं जहन्नुम (नरक) में पहुँच गया हूँ।

"वातावरण बड़ा ही वीभत्स हैं, जगह-जगह खून व पीप की नदियाँ बह रही हैं, लोग एक दूसरे को मार व काट रहे हैं। इतने में कुछ लोग तलवार लेकर मेरी ओर दौड़े, मेरे शरीर के टुकड़े - टुकड़े कर दिए किंतु मैं फिर जुड़ गया, अब मेरे ऊपर साँप, बिच्छु डंक मार रहे हैं, मुझे तरह-तरह की यातनाएँ दी जा रही हैं, भूख व प्यास बुझाने के कोई साधन नहीं हैं ---- आदि।"

अकबर ने पूछा - बीरबल ! अब तुम्ही बताओ भला इससे भी भयानक कुछ हो सकता है ?

बीरबल बोले - जहाँपनाह ! इससे भी भयंकर संभव है। अकबर ने कहा - वह कैसे ?

बीरबल ने जवाब दिया - "महाराज ! यदि हम हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ जैसे अनैतिक कार्यों में हीं लगे रहे तो स्वप्न में देखा सब सच भी हो सकता है।"

वैदेही संदीप जैन, दिल्ली

मंदिर जाते समय
हमारे साथ कौन सी वस्तु होनी चाहिये

हमारे साथ कौन सी वस्तु नहीं होनी चाहिये

सही जोड़ी बनाइये

भगवान महावीर स्वामी

मुनि सुव्रतनाथ

भगवान नमिनाथ

भगवान नेमिनाथ

भगवान मल्लिनाथ

भगवान पार्श्वनाथ

ज्ञान पहेली के उत्तर 1. मुनिराज 2. भगवान बाहुबलि 3. चिंता 4. ज्ञान 5. घंटा

परिणामों की विचित्रता

सिद्धार्थ नगरी के महाराज क्षेमंकर और महारानी विमला ने अपने दोनों पुत्रों देशभूषण और कुलभूषण को विद्या अध्ययन के लिये आश्रम भेज दिया। उन दोनों ने अपने गुरु सागरघोष के अनुशासन में रहकर विनयपूर्वक सभी विद्यायें सीख लीं और चौदह वर्षों के लम्बे समय के बाद दोनों अपने राज्य वापस चल दिये।

सम्पूर्ण कलाओं में पारंगत अपने राजकुमारों के राज्य वापस आने की खुशी में राजधानी को दुल्हन की तरह सजाया गया।

राजकुमारी कमलोत्सवा अपने भाईयों का स्वागत करने के लिये हाथ में आरती का थाल लिये हुये खड़ी थी। समस्त कलाओं में पारंगत अपने भाईयों को देखकर बहुत खुश हो रही थी। जैसे–जैसे राजकुमारों का रथ आगे बढ़ रहा था, नगरवासी राजकुमारों पर फूलों की वर्षा कर रहे थे। लोग अपने राजकुमारों को देखने के लिये उत्सुक हो रहे थे।

राजकुमारी कमलोत्सवा अपने महल की छत पर खड़ी उनके पास आने की प्रतीक्षा कर रही थी। कमलोत्सवा को राजकुमार नहीं जानते थे। दोनों राजकुमारों ने कमलोत्सवा को देखा तो उसके अत्यंत सुन्दर रूप को देखकर मोहित हो गये। दोनों भाईयों में विवाद हो गया कि इस युवती के साथ विवाह कौन करेगा ? दोनों ने तलवारें निकाल ली और लड़ने के लिये तैयार हो गये। सभी आश्चर्यचकित हो गये कि ये अचानक क्या हो गया ? तभी राजकुमारी अपने भाईयों की आरती उतारने के लिये

मुस्कराती हुई उन दोनों के सामने आकर खड़ी हो गई। तभी सेवकों ने दोनों राजकुमारों और राजकुमारी कमलोत्सवा की जय जयकार की। दोनों भाइयों ने मंत्री की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा कि ये सुन्दर युवती कौन है? तब मंत्री ने बताया कि यह आपकी छोटी बहन कमलोत्सवा है। यह आप दोनों को पहली बार देखकर इतनी प्रसन्न है मानों किसी निर्धन व्यक्ति को हीरा मिल गया हो। इसका जन्म आपके आश्रम जाने के बाद हुआ था इसलिये इसे आपने नहीं देखा।

दोनों भाईयों ने एक दूसरे को देखा और लज्जा के कारण अपनी आंखें नीचे कर लीं और सोचने लगे कि धिक्कार है हमें, जिन्होंने अपनी सगी बहिन के लिये ऐसे विचार किये। इसके मोह में ऐसे पागल हो गये कि एक दूसरे से लड़ने तैयार हो गये। हे भगवान! ऐसे परिणामों को धिक्कार है।

दोनों भाई शांत भाव से विचार कर रहे थे। तभी बहन ने आरती उतारने के बाद कहा कि भैया! अब आप महल में प्रवेश कीजिये। तब कुलभूषण ने कहा कि बहन! महल में तो हम जायेंगे परन्तु ईंट–पत्थर के महल में नहीं अपने चैतन्य महल में। जिस ईंट पत्थर के महल के प्रवेश द्वार पर ही मोह के सर्प ने डस लिया हो उस महल के अंदर क्या होगा ?

कमलोत्सवा ने कहा कि भैया! आप ये कैसी बातें कर रहे हैं ? मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

देशभूषण ने कहा कि बहन! ये मत पूछो। अब हम वीतरागी गुरु की शरण में जायेंगे। इतना कहकर वे दोनों दीक्षा लेने के लिये वन की ओर चले गये और राज्य का हर्ष का उत्सव दुःख में बदल गया।

संकलन – स्वस्ति जैन, देवलाली

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

प्रश्न–1. क्या सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र प्राचीन काल से उसी अवस्था में अभी तक स्थित है?

उत्तर– पर्वतों के आकार प्रकार बदल जाते हैं, परन्तु स्थान वही रहता है।

प्रश्न–2. भव्य और अभव्य में क्या अंतर है?

उत्तर– भव्य जीव में मोक्ष जाने की योग्यता होती है और अभव्य जीव में मोक्ष जाने की योग्यता नहीं होती।

प्रश्न–3. भारत में जैन तीर्थ स्थल किस प्रांत में सबसे अधिक किस प्रान्त में अधिक हैं?

उत्तर– मध्यप्रदेश में।

प्रश्न–4. देवता और भगवान में क्या अन्तर है?

उत्तर– देवता हमारी तरह संसारी होते हैं और भगवान सर्वज्ञ, मोक्षगामी और पूर्ण सुखी होते हैं।

प्रश्न–5. हम सत्य से डरें या झूठ से?

उत्तर– आप सत्य को अपनाइये, झूठ अपने आप डरने लगेगा।

प्रश्न–6. क्या टी.वी. देखकर हमारे परिणाम होते हैं?

उत्तर– टी.वी. देखकर परिणाम खराब नहीं होते, खराब परिणामों में टी.वी. देखने के परिणाम होते हैं।

प्रश्न–7. जब बहुत गुस्सा आ रहा हो तो क्या करें?

उत्तर– अपना मन कहीं और लगाने का प्रयास करें और जैसे हो परिस्थिति टालने का उपाय करें क्योंकि गुस्से में हुये नुकसान जिन्दगी भर दुख देगा।

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

शिरोमणि परम संरक्षक	–	1 लाख रूपये
परम संरक्षक	–	51 हजार रूपये
सरंक्षक	–	31 हजार रूपये
परम सहायक	–	21 हजार रूपये
सहायक	–	11 हजार रूपये
सहायक सदस्य	–	5 हजार रूपये
सदस्य	–	1000/–

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं !

हमारी नवीन योजनायें
आपका सहयोग आमंत्रित

सभी सहयोगियों के नाम पुस्तक में प्रकाशित किया जायेंगे।

धार्मिक बाल गीतों और कविताओं की पुस्तक –संस्था द्वारा विशेष रूप से बच्चों के लिये गाये जाने वाले धार्मिक बाल गीतों, भजनों और कविताओं की एक पुस्तक तैयार की जा रही इसका कार्य प्रारंभ हो गया है। इस पुस्तक में लगभग 200 बाल कविताओं, भजनों, गीतों का संग्रह होगा। इस पुस्तक को सचित्र और रंगीन प्रकाशित करने की भावना है। इसके प्रकाशन में लगभग 40,000/– का व्यय अनुमानित है।

धार्मिक लोरी वीडियो सीडी – संस्था द्वारा बालकों को रूचिकर, आध्यात्मिक 8 लोरियों की वीडियो सीडी बनाई जा रही है । इस सीडी का अनुमानित व्यय 80 हजार रूपये है । रूचिवंत साधर्मी अपनी भावनानुसार इस कार्य में सहयोग प्रदान कर सकते हैं । प्रत्येक दानदाता का नाम सीडी में सहयोगी के रूप में दिया जायेगा ।

इन दोनों कार्यों में आपका आर्थिक सहयोग आमंत्रित है। आपकी छोटी राशि भी इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये बड़ा सहयोग बनेगी। आप अपनी राशि '' आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर'' के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें – 9300642434. E-mail - chehaktichetna@yahoo.com

उत्तम शौच धर्म
पंडित जी, आप कौन है। यहां क्यों लेटे है। कहां जा रहे है?
मैं बनारस से सब विधाये पढ़कर लौटा तो मेरी पत्नि ने पूछा बताओ "पाप का बाप क्या है" मैं इसका उत्तर न द पाया। इसका उत्तर जानने लिये बनारस जा रहा हूं।
आप चिन्ता न करिये, इसका उत्तर आपको मैं दूंगी। कृपया आज आप मेरे मकान में ही ठहरिये।
परन्तु यह तो बताओ तुम हो कौन?
महाराज मैं एक वैश्या हूं। आपके ठहरने से मेरा घर पवित्र हो जायेगा।
क्या कहा? मैं और वैश्या के यहां ठहरूं! नहीं, नहीं, हरगिज नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता मुझे तो तुम्हारे चबूतरे पर लैटने से ही बड़ा पाप लग गया है।

घबराइये नहीं पंडित जी। यह लीजिये 100 रूपये। यदि मेरे यहां ठहरने से आपको कोई पाप लगे तो प्रायश्चित कर लेना।
अच्छा! हम ठहर जाते हैं।
क्या बिगड़ जायेगा इसके यहां ठहरने से! और 100 रूपये भी तो मिल रहे हैं।
महाराज मेरी तीव्र इच्छा है कि आज आप मेरे यहां ही भोजन कर लें तो मेरा चौका पवित्र हो जाये।
छि: छि: क्या कहा? मैं और तुम्हारे यहां भोजन करूं। क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।
क्रुद्ध न हूजिये पंडित जी मैं सामान मंगाये देती हूं। आप स्वयं भोजन बना कर खा लीजिये और प्रायश्चित के लिये यह लीजिये 200 रूपये।
भला अपने हाथ से भोजन बना कर खा लेने मे हर्ज ही क्या है और 200 रूपये की रकम कोई थोडी भी तो नही है।
है तो यह मेरे धर्म के विरुद्ध। परन्तु तुम्हारी भक्ति देखकर चलो मैं ऐसा कर लूंगा।

भोजन तो आपने अपने हाथ से बना ही लिया। अब तो हमारी एक ही इच्छा है। कि आप हमारे हाथ से ही भोजन कर लेते तो हमारे सब पाप धुल जाते। और हां पंडित जी इसके लिये आपको कुछ प्रायश्चित करना पड़े तो उसके लिये हाजिर है आपकी सेवा में 500 रूपये।
500 रूपये मिल रहे है। मेरा क्या बिगड़ जायेगा इसके हाथ से भोजन करने में। जैसे मेरे हाथ वैसे इसके हाथ बल्कि इसके हाथ तो हमसे भी कोमल है बेचारी का मन भी रह जायेगा और असल बात तो यह है कि यहां देखते भी कौन है।
तुम इतना आग्रह कर रही हो तो चलो तुम्हारे हाथ से एक ग्रास ले लेंगे।
पंडित जी ने ग्रास लेने के लिये मुंह खोला तो वेश्या ने ग्रास देने के बजाय गाल पर थप्पड़ जड़ दिया...
यह क्या किया तुमने? तुम बड़ी दुष्ट हो, पापी हो, तुम्हारा सुधार कभी न हो सकेगा।
पंडित जी महाराज अब तो समझ गये होगें पाप का बाप क्या है। "लोभ" जिसने आपको यहां तक गिरा दिया। कि मेरे हाथ से भी भोजन करने को तैयार हो गये। घर लौट आओ अब बनारस आने की जरूरत नहीं।
इसीलिये तो पं. धनात राय जी ने लिखा है:- "लोभ पाप का बाप बखाने"

झ
ल
कि
याँ

झ
ल
कि
याँ

जबेरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव